कीजिए।

प्रश्न 19. हिन्दी-उपन्यास के आरम्भ और क्रमिक विकास का आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

उत्तर- यद्यपि भारतीय कथा-साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन कहा जाता है लेकिन हिन्दी का उपन्यास-साहित्य आधुनिक युग की देन है। उपन्यास के आधुनिकतम रूप के अनुसार संस्कृत-साहित्य में उपन्यासों का अभाव ही था। कादम्बरी और दशकुमारचरित आदि कृतियाँ उपन्यास नहीं कहला सकतीं। हिन्दी उपन्यासों की परम्परा का आरम्भ सूफी कवियों के प्रेमाख्यानों से मानना भी उचित नहीं है, क्योंकि प्रेमाख्यानों पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि उनमें औपन्यासिक तत्वों का अभाव है।

यों तो समीक्षकों ने हिन्दी उपन्यास-साहित्य का वर्गीकरण करते समय अपनी-अपनी सुविधानुसार उसे विभाजित करने का प्रयत्न किया है और कुछ ने उसे-

1. आरम्भिक काल	सन् 1872 ई. से	सन् 1891 ई. तक
2. निर्माण काल	सन् 1891 ई. से	सन् 1918 ई. तक
3. विकास काल	सन् 1918 ई. से	सन् 1935 ई. तक
4. विस्तार काल	सन् 1936 ई. से	सन. 1950 ई. तक

नामक चार विभागों में विभाजित किया हैं और कुछ अन्य विचारक उसके इन चार भागों को मान्यता देते हैं-

1. प्रथम अवस्था	सन् 1850 ई.	से 1900 तक
2. द्वितीय अवस्था	सन् 1900 से	1915 तक
3. तृतीय अवस्था	सन् 1915 से	1936 तक
4. आधुनिक काल	सन् 1936 से	आज तक

परन्तु हम इन दोनों विभाजनों से सहमत नहीं है और हमारी दृष्टि में हिन्दी उपन्यास-साहित्य को इस प्रकार तीन भागों में विभाजित करना चाहिए- (1) प्रेमचन्द्र से पूर्व उपन्यास-साहित्य, (2) प्रेमचन्द्रयुगीन उपन्यास और (3) प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास-साहित्य।

(प्रेमचन्द्र पूर्व उपन्यास-साहित्य पर विचार करते समय हमारा ध्यान सर्व प्रथम इस ओर जाता है कि हिन्दी का पहला उपन्यासकार किसे कहा जाय ?) यों तो हिन्दी-साहित्य के सभी अंगों के विकास की ओर ध्यान देने वाले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की दृष्टि उपन्यास-साहित्य पर पड़ी थी और उन्होंने 'पूर्णप्रकाश और चन्द्रप्रभा' नामक एक उपन्यास का अनुवाद किया तथा 'हमीरहठ' नामक एक मौलिक उपन्यास का लिखना भी प्रारम्भ किया परन्तु दुर्भाग्य से वह पूरा न हो सका। लेकिन हर्ष की बात है कि उनके जीवन काल में ही सन् (1882 ई. में हिन्दी का पहला मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरु' प्रकाश में आ चुका था। 'परीक्षा गुरु' के लेखक लाला श्रीनिवास दास हैं। अतः उन्हें हिन्दी का पहला उपन्यासकार कहा जा सकता है।) परन्तु डॉ० श्रीकृष्ण का विचार है कि "देवकीनन्दन खत्री के चन्द्रकान्ता के पहले हिन्दी में उपन्यास के साहित्य-रूप की प्रतिष्ठा न हो सकी।"

वस्तुतः लाला श्रीनिवास दास जी खत्री के पूर्ववर्ती उपन्यासकार ही हैं और किशोरीलाल

Scanned with CamScanner

गोस्वामी ने भी उनके– खत्री जी के– पूर्व उपन्यास–जगत में प्रवेश किया था। अतः खत्री जी को हिन्दी का पहला उपन्यासकार नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार लाला श्री निवासदास का 'परीक्षा गुरु' ही हिन्दी की सर्वप्रथम औपन्यासिक कृति और उनके अतिरिक्त भारतेन्दु–युग के अन्य कई लेखकों ने भी उपन्यास–लेखन की ओर ध्यान दिया, किशोरी रत्नचन्द्र प्लीडर का नूतन चरित्र, बालकृष्ण भट्ट का नूतन ब्रह्मचारी और सौ अजान एक सुजान, राधाकृष्णदास का निस्सहाय हिन्दू, राधाचरण गोस्वामी का विधवा विपत्ति कार्तिक प्रसाद खत्री का जया, बालमुकुन्द गुप्त की कामिनी आदि उल्लेखनीय हैं। इस युग में ही अनुवाद की ओर भी विशेष ध्यान दिया गया और सबसे अधिक अनुवाद बंगला उपन्यासों का हुआ। रामकृष्ण वर्मा और कार्तिका प्रसाद खत्री ने उर्दू व अंग्रेजी के बहुत से रोमांटिक और जासूसी उपन्यासों के अनुवाद प्रकाशित किये।

(यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो भारतेन्दु युग में अनूदित उपन्यासों की ही प्रधानता दीख पड़ती है और जो मौलिक उपन्यास उपलब्ध होते हैं, उनमें भी कलात्मकता का अभाव–सा है। इतिवृत्त व घटनाओं की प्रधानता, चरित्र–चित्रण की न्यूनता, उपदेशात्मकता की अधिकता और शैली की अपरिपक्वता ही दृष्टिगोचर होती है।) प्रेमचन्द्र पूर्ववर्ती उपन्यासकारों में देवकी नन्दन खत्री, किशोरीलाल गोस्वामी व गोपालराम गहमरी भी उल्लेखनीय हैं। खत्री जी ने चन्द्रकांता व चन्द्रकाँता सन्तति की रचना की जिनमें तिलस्मी और ऐय्यारी का वर्णन है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन उपन्यासों को इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त हो गई कि बहुत से लोगों ने इन्हें पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। परन्तु कलागत विशिष्टताओं की दृष्टि से इन उपन्यासों का महत्व कम है। इसी प्रकार (गहमरीजी ने जासूसी उपन्यास लिखे और गोस्वामी जी ने उपन्यास पत्रिका निकाली जिसमें उनके लगभग 64 छोटे–बड़े उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। उपन्यासों का विषय सामाजिक था और इनमें कामुकता व विलासिता का चित्रण विशेष रूप से था।) अतः इन लेखकों की औपन्यासिक कृतियों को कलात्मक दृष्टि से सामान्य कोटि का ही कहा जायेगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि उपन्यासों में अस्वाभाविक घटनाओं की अधिकता–सी है। इसी बीच श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की ठेठ हिन्दी का ठाठ और अधखिला फूल, तथा लज्जाराम मेहता की आदर्श हिन्दू व हिन्दू गृहस्थ आदि रचनाएँ प्रकाश में आई, पर उपन्यास–कला की दृष्टि से इन्हें भी सामान्य कोटि का ही माना जाएगा।

इस प्रकार (प्रेमचन्द्र–पूर्व उपन्यास–साहित्य को आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी ने जो आरम्भिक संक्राँतिकाल कहा है,) यह उचित ही है। बाजपेयी जी का कहना है कि "इस नव–निर्माण के बीच कभी कोई उपन्यासकार किसी पौराणिक या सामाजिक कथानक का आधार लेकर कोई उपदेशात्मक कृति प्रस्तुत कर देता था और कभी कोई भावुकतापूर्ण रचना सामने आ जाती थी, परन्तु सामाजिक प्रगति और जीवन की वास्तविकता में बैठकर उसके यथार्थ और प्रभावशाली चित्र हमारे आरम्भिक उपन्यासकार अधिक मात्रा में नहीं दे सके। अब तक रीति के साहित्यिक संस्कार बने हुए थे और नवीन सामाजिक चेतना का उदय नहीं हुआ था। हिन्दी उपन्यासों के नये युग का निर्माण करने में अंग्रेजी और बंगला आदि से किए गए अनुवादों का भी महत्व कुछ कम नहीं हैं। परन्तु ध्यान देने की बात यह है कि उन दिनों अंग्रेजी के साहित्यिक, जासूसी और प्रेम–चर्चा प्रधान उपन्यासों का जितना अनुकरण हुआ, उतना साँस्कृतिक और सामाजिक उपन्यासों का नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि तब तक लोक

Scanned with CamScanner

कृति का परिमार्जन हिन्दी में नहीं हो पाया था। अच्छी कृतियों का बाजार नहीं था यह भी सम्भव है कि अंग्रेजी के श्रेष्ठतम उपन्यास तब तक इस देश में प्रचलित ही न हो पाए हों। अतः 'लंदन-रहस्य' और लैला जैसे साहित्यिक और प्रेम-चर्चा प्रधान उपन्यास ही अनुवाद के योग्य समझे गए। 'टाम काका की कुटियां' के रूप में एक अच्छे उपन्यास का अनुवाद अवश्य हुआ। बंगला से भी कुछ अच्छी कृतियाँ अनूदित होकर आई जिनमें स्वर्णलता, दुर्गेशनन्दिनी, बंग विजेता, विरजा, दीप निर्वाण, युगलांगुरीय, कृष्णकांत का दान-पत्र आदि उल्लेखनीय हैं।"

प्रेमचन्द्र और समसामयिक उपन्यासकार-(जैसा कि बाजपेयी जी ने पुनः कहा है- "उपन्यासों के इस निर्माण और अनुवाद के आरम्भिक युग को पार करते ही हम हिन्दी उपन्यासों के उस नये युग में पहुंचते हैं, जिनका शिलान्यास प्रेमचन्द्र जी ने किया और जिसमें आकर हिन्दी-उपन्यास एक सुनिश्चित कला-स्वरूप को प्राप्त कर अपनी आत्मा को पहचान सका तथा अपने उद्देश्य से परिचित होकर उसकी पूर्ति में लग सका।")

इस प्रकार निर्विवाद रूप से प्रेमचन्द्र को हिन्दी-उपन्यास-साहित्य का निर्माता कहा जा सकता है और जैसा कि क्षेमचन्द्र 'सुमन' व योगेन्द्र कुमार मल्लिक का कहना है- "मुंशी प्रेमचन्द्र वस्तुतः हिन्दी के युग-प्रवर्तक अमर कलाकार हैं। उनसे पूर्व हिन्दी उपन्यास सर्वथा अविकसित था उसमें तिलिस्म ऐय्यारी और जासूसी कथाओं की ही प्रधानता थी किन्तु प्रेमचन्द्र जी ने उपन्यास साहित्य को मानवीय जीवन के निकट ला दिया और उसमें तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं का चित्रण किया। उनके उपन्यास तत्कालीन संघर्षमय जीवन और समाज के प्रतिबिम्ब हैं। 'सेवासदन' उनका सर्वप्रथम उपन्यास है, इसमें नागरिक जीवन और समाज के मध्य वर्ग की सामाजिक समस्याओं का अत्यंत चित्ताकर्षक वर्णन किया गया है। हमारे समाज और परिवार की कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भीषण दुष्परिणामों का यह एक यथार्थ चित्र है। कथोपकथन, भाव, शैली और कथावस्तु सभी कुछ नवीन और मौलिक है। पात्र सजीव और अपनी अंग-प्रवृत्तियों के अनुकूल विकसित होते हैं। 'प्रेमाश्रम' में भारतीय ग्रामीण जीवन को चित्रित किया गया है। पुरानी सामंती और जमींदारी सभ्यता किस प्रकार खोखली हो चुकी है, किस प्रकार वह अपने अन्तिम दिनों में किसानों के शोषण में व्यस्त है इन सबका सजीव और मार्मिक चित्रण किया गया है। यह उपन्यास गाँधीवाद समझौता पद्धति द्वारा समय की विषमताओं के सुलझाव को प्रस्तुत करता है। रंगभूमि का कथानक पर्याप्त जटिल है, किन्तु सूरदास, विनय, सोफिया, आदि पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण अमर हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, मजदूर, किसान, पूंजीपति इत्यादि सभी वर्ग इसमें चित्रित है। 'कायाकल्प' में अलौकिक कथा का समावेश है। इसमें रानी देवप्रिया की अतृप्त वासना का बहुत नग्न चित्रण है। रियायतों के जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया गया है। 'कायाकल्प' का कथानक असंगठित है। प्रतिज्ञा, गबन और निर्मला मुंशीजी के छोटे उपन्यास हैं। इनमें सामाजिक समस्याओं का चित्रण है। 'गोदान' प्रेमचन्द्र जी की अन्तिम सर्वोत्कृष्ट कृति है। क्या भाव और क्या टेकनीक सभी में एक नवीन जीवन और प्रौढ़ता है। कथा में अद्भुत प्रवाह है, भाव में साँझ का सुनहलापन। 'होरी' संसार के अमर पात्रों में से एक है। यहाँ आकर मुंशीजी का दृष्टिकोण भी यथार्थवादी हो गया है। उन्होंने जीवन की कटुता को पूर्णतया अनुभव करके उसे अपने इस अमर उपन्यास में चित्रित कर दिया।

(मुन्शी प्रेमचन्द्र एक सुधारक थे, उनकी सुधारवादी प्रवृत्ति उनके उपन्यासों में विलुप्त

Scanned with CamScanner